P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मुगलकालीन मारवाड़ की राजनीतिक स्थिति (1500 से 1700 ई.)

कैलाश सोनगरा
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

इस शोध–पत्र के माध्यम से तत्कालीन मारवाड़ की राजनीतिक स्थिति का अवलोकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस में जोधपुर के महाराजा राव सातल से लेकर मालदेव व अजीतसिंह कालीन इतिहास एवम् अन्य राज्यों के साथ सम्बंधो व घटनाक्रम का उल्लेख शोध–पत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : मुगल, राठौड़, सिसोदिया, मारवाड़, जोधपुर, परगणा, मनसब व मनसबदारी।

प्रस्तावना

आलोच्य काल में भारत देश पर मुगलों का राज्य स्थापित हो गया था। मुगलों ने धीरे–धीरे देश के अन्य राज्यों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया था। दिल्ली का बादशाह उस समय अकबर था। अकबर के बाद उसका पुत्र जहांगीर तथा जहांगीर के बाद उसका पुत्र शाहजहाँ आया, तब तक मारवाड़ राज्य मुगलों के अधिकार में हो गया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध–पत्र का मुख्य उद्धेश्य अभिलेखों में उल्लेखित तत्कालीन राजनीतिक स्थिति की जानकारी उपलब्ध करवाना है ताकि शोध छात्रों हेतु प्रेरक साधन के रूप में काम आ सके।

शोध प्रविधि

इस शोध कार्य के लिए अभिलेखों, बहियों, दस्तावेजों, शोध–पत्र पत्रिकाओं आदि का उपयोग किया गया है।

आलोच्य काल में भारत देश पर मुगलों का राज्य स्थापित हो गया था। मुगलों ने धीरे–धीरे देश के अन्य राज्यों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया था। दिल्ली का बादशाह उस समय अकबर था। अकबर के बाद उसका पुत्र जहांगीर तथा जहांगीर के बाद उसका पुत्र शाहजहाँ आया, तब तक मारवाड़ राज्य मुगलों के अधिकार में हो गया। मारवाड़ के राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली अब हम 1500–1700 ई. तक के मारवाड़ के राजाओं का परिचय तथा उनकी राजनीतिक स्थितियों को जानते है –

राव सातल

ये संवत् 1545 (1488 ई.) की ज्येष्ठ सुदी 3 की गद्दी पर बैठे, इसका जन्म वि.सं. 1592 (1535 ई.) में हुआ था इन्होंने अपने छोटे भाई सूजाजी के पुत्र नरा को गोद लिया[1]।

राव् सूजाजी

उत्तराधिकारी के रूप में सातलजी के छोटे भाई हुए, रावजी के पुत्र बाधाजी उनके जीवन समय में ही वि.सं. 1571 भाद्रपद सुदी 14 को स्वर्गवासी हो गए थे। 1572 संवत् (1515 ई.) कार्तिक वदी 9 को ये भी स्वर्गवासी हो गए [2]

राव बाधाजी

इनका जन्म वि.सं. 1514 वैशाख सुदी 15 को हुआ था 1571 संवत् (1514 ई.) को असाध्य रोग से मृत्यु हुई इनके सात पुत्र थे जिनमें वीरम, गांगी, प्रयाग, भीम, खेतसी, सीगण, जैतसी थे[3]।

राव गंगा

राव गंगा का सिंहासनरोहण संवत् 1572 (1515 ई.) को हुआ था,[4] वि.सं. 1580 के आषाढ़ में राव गांगा का अफीम की 'पीनक' में महल में गोच्छै से गिर जाने के कारण इनकी मृत्यु हो गई[5]।

राव मालदेव

राव गांगा के ज्येष्ठ पुत्र राव मालदेव का जन्म पोष वदि 1, 1568 वि.सं., 5 दिसम्बर 1511 में हुआ था[6] इनका सिंहासनरोहण 1588 वि.सं. (1531 ई.) में

हुआ था[7]। उस समय उसके अधिकार में केवल जोधपुर व सोजत के परगने थे। मालदेव एक महत्वाकांक्षी व साहसी शासक था। उसके समय में बाबर की (सन् 1530) मृत्यु के बाद दिल्ली में हुमायूं शासन कर रहा था। वह गुजरात के बहादुरशाह और शेरशाह के विरुद्ध युद्ध में लड़ा था। यह देखकर मालदेव ने अपने राज्य विस्तार की नीति अपनाई। सन् 1531 में उसने भाद्राजून के सींधल राठौड़ वीरा को पराजित कर वहॉ अपने पुत्र रत्नसिंह को अधिपति बना दिया। बाद में मेड़ता के वीरमदेव के राज्य को लेने का प्रयत्न किया लेकिन वीरमदेव ने उससे समझौता कर लिया। जब वीरमदेव समझौते के अनुसार भाद्राजून गया तब पीछे से नागौर के खान को कहकर मेड़ता पर सन् 1534 में आक्रमण करा दिया। मौका देखकर मालदेव ने नागौर पर आक्रमण कर दिया और उसे अपने अधिकार में कर लिया। नागौर के खान ने मालदेव से समझौता कर अपने अधिकार के 21 गांव हरसोलाव सहित मालदेव को दे दिये। वीरमदेव ने गुजरात के सुल्तान के सेनापति शमशेर–उ–मुल्क को हराकर अजमेर पर कब्जा कर लिया। मालदेव ने वीरम से अजमेर की मांग की लेकिन उसने मना कर दिया। इससे मालदेव मेड़ता के वीरमदेव से नाराज था। उसने मेड़ता पर आक्रमण कर वीरमदेव को अजमेर भगा दिया। एक वर्ष बाद मालदेव ने अजमेर पर भी कब्जा कर लिया। वीरमदेव तंग आकर दिल्ली शेरशाह के पास चला गया। मालदेव ने सिवाणा पर भी अधिकार कर लिया और जालोर के सिकन्दरखां को बन्दी बना लिया। सांचौर के चौहानो को भी पराजित कर गुजरात की ओर राधनपुर तथा खाबड़ प्रदेश पर अधिकार कर लिया। मालदेव ने सन् 1540 तक चाकसू, फतेपुर, टोडा, लालसोट, मलारणा आदि पर भी अधिकार कर लिया। सन् 1542 तक वह अपनी शक्ति की चरम सीमा तक पहुॅच गया[8]। राजरूपक में मालदेव की विजयों के लिए लिखा है –

माल गंग गादी राव मारू।
सगला किया आपरे सारू।।

मेवाड़ में महाराणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् शासन–व्यवस्था बिगड़ गई थी। इसका लाभ उठा कर दासी पुत्र बलवीर ने बदनौर, कोसीथल, मदारिया, नाडोल आदि पर अधिकार कर लिया और अपने समर्थकों को दे दिये। यह देखकर मालदेव ने सांगा के पुत्र उदयसिंह की सहायतार्थ सोनगरा अखेराज को मेवाड़ भेजा। राठौड़ों और सिसोदियों की सम्मिलित सेना ने मावली के पास बनवीर को पराजित किया और चित्तौड़ पर उदयसिंह का कब्जा करा दिया।

बीकानेर का शासक राव जैतसी इस समय अपनी शक्ति बढ़ाने में लगा था। मालदेव शंकित हो गया और उसने उसकी शक्ति नष्ट करने के लिए सन् 1541 में उसके विरूद्ध सेना भेज दी, पर जोधपुर की सेना ने रात के अंधेरे में जैतसी पर सन् 1542 में साहेबा नामक स्थान पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में जैतसी मारा गया। सेना ने आगे बढ़कर बीकानेर राज्य के आधे हिस्से पर कब्जा कर लिया। मालदेव ने सामन्त कूंपा को वहॉ का राज–काज सौंप दिया।

इस प्रकार राव मालदेव की उत्तर में सीमा बीकानेर तथा हिसार तक पहुॅच गई। पूर्व में बयाना व धौलपुर, दक्षिण में चित्तौड़ तक तथा पश्चिम में जैसलमेर तक राधनपुर सीमा पहुॅच गई थी। सन् 1542 तक राव मालेदव अपनी उन्नति के शिखर पर पहुॅच गया था।

सन् 1540 में मुगल सम्राट् हुमायूं चौसा और कन्नौज के युद्ध में पराजित होकर मारा–मारा फिर रहा था। मालदेव ने हुमायूं को सहायता देने के लिए एक संदेश 1541 में भेजा ताकि वह तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का लाभ उठा सके। दूसरी ओर राव मालदेव के शत्रु शेरशाह के दरबार में पहुंच चुके थे। मालदेव इस कारण शेरशाह से नाराज था। हुमांयू ने पहले तो मालदेव के संदेश की परवाह नही की लेकिन बाद में पछताया और जब उसके सहायक उसे छोड़ चले गये तब स्वयं मालदेव के राज्य फलौदी परगने में पहुंचा। उसने एक दूत अनगखां के माध्यम से मालदेव से सहायता की बात चलाई। मालदेव ने तब कोई स्पष्ट आश्वासन नहीं दिया। विवश होकर हुमांयू अमरकोट चला गया। मुस्लिम इतिहासकारों ने मालदेव पर हुमायूं से धोखा करने का आरोप लगाया है लेकिन यह सही प्रतीत नहीं होता है[9]।

मालदेव ने हुमायूं की सहायता नहीं की। उधर बीकानेर व मेड़ता के शासकों द्वारा बहकाये जाने पर शेरशाह ने एक बड़ी सेना लेकर मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी ताकि मालदेव जैसे शक्तिशाली राजा को दबाया जा सके[२७]। शेरशाह सेना लेकर आ गया लेकिन उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मालदेव को हराना आसान नहीं है। फारसी तवारीखों (इतिहास ग्रंथों) के अनुसार शेरशाह 80,000 सैनिक और शक्तिशाली तोपखाने के साथ डीडवाना पहुॅचा। जहां मालदेव का सेनाध्यक्ष कूंपा डेरा डाले हुआ था। शेरशाह कूंपा को हराकर बाबरा (जिला पाली) पहुंचा। मालदेव भी अपनी सेना सहित सुमेल गिरि नामक स्थान पर जनवरी 1544 में पहुंचा। सुमेल और गिरि दो नजदीक–नजदीक परन्तु अलग–अलग गांव है, युद्ध गिरि में हुआ था। ये दोनों स्थान मारवाड़ व अजमेर की सीमा के पास स्थित थे। शेरशाह ने अब एक चाल चली। अपने नाम जाली पत्र तैयार करवाये जिनमें लिखा हुआ था कि वे मालदेव को गिरफ्तार कर आपकी सेवा में पेश कर देंगे। ऐसे पत्र मालदेव के डेरे के पास फिंकवा दिये। उसने मेड़ता के वीरमदेव की ओर से भी ऐसा पत्र मालदेव के पास भिजवा दिया जिसमें लिखा था कि आपके राज्य के कुछ सरदार शेरशाह से मिल गये है। इन पत्रों को पढ़कर मालदेव घबरा गया। राठौड़ सरदारों में फूट पड़ गई। मालदेव 4 जनवरी, 1544 की रात में ही अपनी मुख्य सेना लेकर मैदान से भाग निकला[10]। पीछे बची राठौड़ सेना ने कूंपा और जैता के नेतृत्व में शेरशाह का डटकर सामना किया लेकिन अन्त में पराजित हुए। शेरशाह जीत गया, लेकिन उसे कहना पड़ा कि 'मैने मुट्ठी भर बाजरे के लिए ही दिल्ली की सल्तनत दांव पर लगा दी थी।'[11] विजय के बाद शेरशाह ने मालदेव का पीछा करने के लिए एक सेना भेजी और स्वयं अजमेर पहुंच कर उस पर कब्जा कर लिया। इसके बाद वह नागौर गया और कल्याणमल को बीकानेर दे दिया। मेड़ता पर वीरमदेव का कब्जा पहले ही करा चुका था। जोधपुर

में ख्वाजा खां और ईसा खां को शासन प्रबन्ध के लिए नियुक्त कर दिया। शेरशाह का मारवाड़ पर 524 दिन तक कब्जा रहा और उसकी मृत्यु के पश्चात् मालदेव ने जून 1545 में जोधपुर पर पुनः अधिकार कर लिया[12]। बाद में उसने फलौदी, पोकरण, बाड़मेर, कोटड़ा, मेड़ता, जालौर व बदनौर पर भी अधिकार कर लिया। जैसलमेर के भाटियो को भी दबाया।

सुमेल युद्ध के बाद अजमेर का शासन हाजी खां के हाथों में आ गया। मालदेव ने अजमेर विजय करने के लिए सेना भेजी। उधर हाजी खां ने मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह तथा बीकानेर के राव कल्याणमल से सैनिक सहायता लेकर युद्ध के लिये तैयार हो गया। यह देखकर मालदेव बिना युद्ध लड़े ही लौट आया। बाद में उदयसिंह और हाजीखां के सम्बन्ध बिगड़ गये तब हाजीखां ने मालदेव से सहायता मांगी। महाराणा की सेना हरमाड़ा तक पहुंच गई जहां मालदेव तथा हाजीखां की सेनाओं ने उसे हरा दिया। विजयी सेना ने मेड़ता पर भी आक्रमण कर अपने अधिकार में कर लिया। मालदेव ने मेड़ता में एक सुदृढ़ दुर्ग बनवाया, जो मालकोट के नाम से जाना जाता है और वीरमदेव के पुत्र जयमल को वहॉ का शासक नियुक्त कर दिया।

दिल्ली में सन् 1556 में हुमायूं की मृत्यु हो जाने पर अकबर राजगद्दी पर बैठ गया था। वह अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने में लगा था। उसने हरमाड़े के युद्ध के पश्चात् ही सन् 1557 में हाजीखां पर आक्रमण कर उसे जैतारण की ओर भगा दिया। मुगल सेना वहॉ भी पहुंच गई। मालदेव मुगल सेना से युद्व करना नहीं चाहता था अतः उसने हाजीखां का साथ छोड़ दिया। जैतारण पर मुगलों का अधिकार हो गया। मुगल सेना ने मेड़ता को भी अपने अधीन कर लिया[13]। सन् 1562 की 7 नवम्बर को मालदेव का देहान्त हो गया[३२]।

मालदेव अपने काल का एक अत्यन्त शक्तिशाली नरेश था। वह बड़ा वीर, महत्वाकांक्षी और स्वभाव से उग्र नरेश था। जब वह राजगद्दी पर बैठा तब उसके अधिकार में केवल जोधपुर व सोजत के परगने थे, लेकिन उसने अपनी शक्ति से न केवल भाद्राजून, मेड़ता, अजमेर पर अधिकार किया, बल्कि बीकानेर को भी मारवाड़ का हिस्सा बना दिया। उसने अपने राज्य में कई गढ़ और किले बनवाये। जोधपुर नगर के चारों ओर शहरपनाह का निर्माण उसी ने करवाया[14]।

मालदेव के 22 पुत्र थे, लेकिन उसकी इच्छानुसार उसका छठा पुत्र चन्द्रसेन उसके राज्याधिकारी बने। इस प्रकार अपने बड़े भाइयों का अधिकार छीनकर राजगद्दी पर 31 दिसम्बर 1562 को बैठने के कारण पॉचो बड़े भाई उससे नाराज हो गये। मालदेव का ज्येष्ठ पुत्र राम तब मेवाड़ में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहा था। वह सोजत पहुंच कर लूटमार करने लगा। दूसरे भाई रायमल ने दूनाड़ा में उपद्रव आरम्भ कर दिया। तीसरा भाई उदयसिंह ने गांगाणी ओर बावड़ी पर अधिकार कर लिया। जब चन्द्रसेन ने अपने भाइयों के विरूद्ध सेना भेजी तब राम और रायमल अपनी–अपनी जागीरों से भाग गये। उदयसिंह युद्व में घायल होकर लोहावट चला गया[15]।

राव चन्द्रसेन

मारवाड़ के शासक राव मालदेव की मृत्यु के बाद साम्राजिक शक्ति के प्रतिरोध का नेतृत्व उसके पुत्र चन्द्रसेन ने किया। कर्नल टॉड ने इस समय की मारवाड़ की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि 'राजा मालदेव की मृत्यु के पश्चात् मारवाड़ राज्य के इतिहास का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। वहॉ के शासन और सम्मान में अनेक परिवर्तन हो गए। ..... मारवाड़ में जहॉ पर राजपूतों का पचरंगा झण्डा फहराता था वहॉ पर अब मुगलों का झण्डा फहरा रहा था।'[३५] इस परिस्थिति को समझने हेतु हमें मालदेव के उत्त उत्तराधिकारी चन्द्रसेन के जीवन वृत का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करना होगा।

मालदेव की मृत्यु 1562 ई. में हुई। वह अपने जीवन–काल में ही अपने तीसरे पुत्र चन्द्रसेन को अपना उत्तराधिकारी बना गया था। उसके चार पुत्र थे – राम, उदयसिंह, चन्द्रसेन तथा रायमल। डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने उपलब्ध स्त्रातो के आधार पर कहा है कि 'राजा मालदेव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राम से अप्रसन्न होकर उसे राज्य से निर्वासित कर दिया, जिस पर वह केलवा (मेवाड़) में जाकर रहने लगा। उसके छोटे भाई से भी उसकी पटरानी नाराज हो गई जिससे 'उसे राज्याधिकार से वंचित रखा गया और उसे जागीर देकर फलौदी भेज दिया। अतएव पिता की मृत्यु पर 1562 ई. में चन्द्रसेन, जो तीसरा पुत्र था, मारवाड़ का शासक बना। वास्तव में चन्द्रसेन को गद्दी मिलना कई सरदारों और उसके अन्य भाइयों को अच्छा नही लगा। चन्द्रसेन ने आवेश में आकर एक चाकर को मरवा डाला। इस घटना से राठौड़ पृथ्वीराज तथा अन्य सरदार बहुत बिगड़े। उन्होंने इस अन्यायपूर्ण कार्य के लिए चन्द्रसेन को दण्ड देने के लिए गठबन्धन किया और राम, उदयसिंह तथा रायमल को आमन्त्रित किया कि वे चन्द्रसेन का विरोध करे।' अतः विद्रोही गुट ने चन्द्रसेन का विरोध करना आरम्भ कर दिया। विश्वेश्वानाथ रेऊ के शब्दों में 'चन्द्रसेन के तीनों भाई जो पहले से ही अप्रसन्न थे इस सूचना को पाते ही विद्रोह के लिए तैयार हो गए।'[16]

गौरीशंकर हीरानन्द ओझा, के अनुसार 'राम ने केलवा से आकर सोजत में उपद्रव किया। रायमल दुनाडे में विद्रोह करने लगा तथा उदयसिंह ने गांगाणी के निकट लॉगड़ गांव को लूटा। राव चन्द्रसेन ने राम और रायमल के उपद्रव का दमन किया तथा उदयसिंह को लोहावट में संघर्ष कर बरछी से घायल किया किन्तु वह बच कर भाग गया। उदयसिंह ने फलोदी में चन्द्रसेन की सेना का सामना करने के लिए तैयारी की किन्तु कुछ सरदारों ने इस गृह–कलह को चन्द्रसेन को समझा–बुझाकर शान्त किया।'[17] यह घटना 1562 में घटित हुई।

अकबर राजपूत राजाओं से मैत्री सम्बन्ध बनाने के लिए नवम्बर 1569 में नागौर पहुँचा[18]। वहॉ उसके 50 दिन रहते उससे मिलने बीकानेर और जैसलमेर के राजा आये। राव चन्द्रसेन और उसके भाई राम और उदयसिंह भी वहॉं पहुँचे। नागौर के दरबार का वातावरण देखकर चन्द्रसेन समझ गया कि अकबर राजपूत राजाओं में फूट डालना चाहता है, अतः वह दरबार से चला गया। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह को अवश्य अकबर के पास छोड़

दिया। अबुल फजल और बदायूँनी का मत है कि नागौर में राव चन्द्रसेन ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली लेकिन बाद की परिस्थितियाँ यह नहीं बतलाती है। इस घटना के बाद अकबर ने भाद्राजून पर आक्रमण करने सूबेदार खान कला को भेज दिया जो स्पष्ट बतलाता है कि चन्द्रसेन ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। इसके विपरीत अकबर ने चन्द्रसेन के भाइयों को लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया। उसने उदयसिंह को समावली के गुजरों को दबाने के लिए भेज दिया और रायसिंह को अपने पास रख लिया। सन् 1572 में जोधपुर का शासन प्रबन्ध बीकानेर के रायसिंह को सौंप दिया[19]।

मुगल शक्ति को आंककर चन्द्रसेन भाद्राजून छोड़कर सिवाणा चला गया। भाद्राजून पर मुगल सेना का अधिकार हो गया। चन्द्रसेन ने मौका देखकर आसरलाई (जैतराण पर परगना) व भिणाय (अजमेर जिला) के गॉवो में लूटमार पर खुब धन इकट्ठा किया, तब अकबर ने बीकानेर के शासक रायसिंह को 1573 में चन्द्रसेन को सिवाणा से निकालने को भेजा। चन्द्रसेन सिवाणा से पीपलोद चला गया और लुक छिप कर मुगल सेना पर आक्रमण करता रहा। जब मुगल सेना का ज्यादा ही दबाव बढ़ा तो वह मेवाड़ की ओर चला गया। मुगल सेना ने सोजत पर भी अधिकार कर लिया। ऐसी स्थिति में चन्द्रसेन वापस सोजत के पास सरवाड़ में आ डटा लेकिन वहॉ से मुगल सेना ने उसे भगा दिया। चन्द्रसेन हरियाली में गया और वहॉ सेना इकटठी कर सोजत पर कब्जा कर लिया। बादशाह ने जब और सेना भेजी तब चन्द्रसेन सारण की पहाड़ियों में चला गया जहॉ उसका अचानक देहान्त 1581 में हो गया[१९]। इस प्रकार अकबर चन्द्रसेन को अपने अधीन करने की इच्छा पुरी नही कर सका। चन्द्रसेन महाराणा प्रताप की भॉति ही स्वतंत्रता प्रेमी था[20]।

मोटा राजा उदयसिंह

राव चन्द्रसेन का भाई उदयसिंह जो बाद में मोटे राजा के नाम से प्रसिद्ध हुए थे, उदयसिंह सन् 1583 में जोधपुर राजगद्दी पर बैठा वह जोधपुर का पहला शासक था, जिसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर मुगल मनसबदारी प्राप्त की। बादशाह ने उन्हें राजा की उपाधि प्रदान की। बादशाह ने उसे लाहौर की सुरक्षा हेतु नियुक्त कर राजा दिया था और वही 1595 में उसकी मृत्यु हो गई।[21] मुहणोत नैणसी के अनुसार मोटा राजा ने जैसलमेर के रावल की पोत्री एवं सूरजमल की पुत्री से विवाह किया था।[22]

सूरसिंह

इनका जन्म वि.सं. 1627 में हुआ था। यह मोटा राजा उदयसिंह का छठवां पुत्र था[23]। इनका राजतिलक अकबर के कर कमलों द्वारा हुआ, दक्षिण में उपद्रवी हब्शी अमर चम्पू का दमन किया, उस समय बादशाह ने इन्हें 'सवाई' राजा का विरूद्ध प्रदान किया था।[24]

बादशाह ने उन्हें दो हजारी जात और सवा हजार का मनसब एवं राजा की उपाधि प्रदान की थी। सन् 1619 में दक्षिण में मुगल सेना में ही रहते महकर के थाने में इनका स्वर्गवास हो गया। राजा सूरसिंह के समय मारवाड़ राज्य का राजस्व प्रबन्ध मुगल शैली पर आरम्भ किया गया।[25] जोधपुर नगर में सूरसागर तालाब, तलहटी के महल, रामेश्वर महादेव का मन्दिर और सूरज कुण्ड इन्हीं ने बनवाये।

महाराजा गजसिंह

महाराज गजसिंह का जन्म संवत् 1652 को कार्तिक सुदि 8 गुरूवार, 30 अक्टूबर 1595 ई. को हुआ था, [26] इनका राजतिलक 1619 ई. में बुरहानपुर में किया गया। तब ही उन्हें तीन हजारी जात, दो हजार का मनसब और राजा की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें जोधपुर, जैतारण, सोजत, सिवाणा, सातलमेर, पोकरण आदि परगनों की जागीर भी प्रदान की गई। गजसिंह भी ज्यादातर दक्षिण में सम्राट के पास युद्व कार्य में ही लगे रहे। बादशाह ने प्रसन्न होकर सन् 1623 में पॉच हजारी जात और चार हजार का मनसब प्रदान कर उन्हें शाहजादा खुर्रम के विरूद्ध भेजा था।[27]

जहॉगीर की मृत्यु के बाद वह शाहजहॉ के समय में मुगल दरबार में सक्रिय रहे। उन्होंने बीजापुर तथा कंधार की लड़ाई में बड़ी वीरता दिखाई थी। बादशाह जहॉगीर ने उनकी मनसब 5000 जात और 5000 सवार कर दी थी। उस समय किसी भी हिन्दू राजा को इससे उॅची मनसब प्राप्त नही थी। उनकी मृत्यु के समय मारवाड़ के शासन के अधीन 5400 गॉव थे और उनके अधीन 9 बड़े दुर्ग थे। उनकी मृत्यु आगरा में ही सन् 1638 में हुई।[28]

महाराजा जसवंतसिंह

जोधपुर के महाराजा गजसिंहजी के द्वितीय पुत्र जसवंतसिंह का जन्म वि.सं. 1683 की माघ सुदी 4 को बुरहानपुर में हुआ था,[29] शुक्रवार, मई 25, 1638 ई.को बादशाह शाहजहाँ ने जसवंतसिंह को टीका प्रदान किया था,[30] शाहजहाँ ने महाराजा जसवंतसिंह को जो हिन्दुस्तान के राजाओं में श्रेष्ठ और फौज, सम्मान तथा रौबदार में प्रथम था और जिसे बादशाह सल्तनत का मजबूत स्तम्भ समझता था, 'महाराजा' का खिताब दिया था[३३] जसवंतसिंह शाही सेना के साथ भारत के पश्चिमोत्तर भाग में पठानों के उपद्रवों को समाप्त करने में क्रियाशील थे, तथा 28 नवम्बर 1678 को जमरूद में उनकी मृत्यु हो गई।[31]

सन् 1658 में बादशाह शाहजहाँ बीमार पड़ा तब उसके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्व प्रारम्भ हो गया। औरंगजेब दक्षिण से चलकर धरमत के मैदान में आ डटा। बादशाह ने शाहजादा दारा के साथ जसवंतसिंह, मुकुन्दसिंह हाडा आदि के साथ औरंगजेब का सामना करने को भेजा। जसवंतसिंह बड़ी वीरता से लड़े, लेकिन वह सहसा शत्रु सेना से घिर गये और युद्ध करते हुए घायल हो गये। उनके साथी उन्हें युद्ध क्षेत्र से बाहर ले आये और जोधपुर लौटने को विवश कर दिया।[32] सहस्त्रों राजपूतों के बलिदान के बाद भी विजय औरंगजेब की हुई। युद्ध के बाद जसवंतसिंह जोधपुर पहुंचे। बाद में (14 अगस्त, 1658) जसवंतसिंह बादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। तब आमेर नरेश मिर्जा जयसिंह की सिफारिश पर बादशाह ने जसवंतसिंह को क्षमा प्रदान की और उन्हें अपनी सेवा में ले लिया,[33] लेकिन औरंगजेब जसवंतसिंह पर उनकी मृत्यु तक सन्देह करता ही रहा यद्यपि जसवंतसिंह औरंगजेब के सम्राट बनने पर उसकी सेवा में उपस्थित हो गये। बादशाह ने उसका मनसब बहाल कर

दिया लेकिन मन में उससे नाराज रहा। जब शाहजहाँ शुजा ने औरंगजेब पर आक्रमण किया तब बादशाह ने जसवंतसिंह को उसका सामना करने सेना के दाहिने पार्श्व का सेनापति बनाकर भेजा। युद्ध में अंतिम सफलता औरंगजेब को प्राप्त हुई। इसके पश्चात् जसवंतसिंह जोधपुर चले आये[34] औरंगजेब इससे नाराज हो गया। सन् 1659 में उन्हें गुजरात का सूबेदार नियुक्त कर दिया[५८] जसवंतसिंह ने गुजरात में रहते वहॉ के उपद्रवियों को दबाया, अतः बादशाह ने उन्हें फिर से महाराजा की पदवी सन् 1659 में दे दी।[35]

महाराजा जसवंतसिंह एक नीति निपुण, निडर और चतुर शासक थे। वे गणीजनों के प्रशंसक तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। उन्होंने मारवाड़ के प्रशासन में कई सुधार किये। उन्होंने जोधपुर के कागा स्थान पर काबुल से बीज व पौधे लाकर अनार का बगीचा लगवाया। राईकाबाग भी तब ही स्थापित किया। उनकी रानियों ने कल्याण सागर और शेखावतजी के तालाब बनवाये। ख्यातों में उन्हें हिन्दुत्व का रक्षक कहा गया है। हिन्दू धर्म के गूढ़ रहस्यों को उसने समझने की चेष्टा की और अपने राज्य में कई मन्दिरों की सहायतार्थ धन दिया। औरंगजेब ने मन्दिर गिराने का आदेश उन्हीं के विरोध करने पर वापस लिये थे।[36]

महाराजा अजीतसिंह

जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अजीतसिंह का जन्म फरवरी, 1679 में हुआ। बादशाह जसवंतसिंह से द्वेष रखता था, अतः उनकी मृत्यु के बाद बालक महाराजा को जोधपुर राज्य का शासक घोषित नहीं किया। उसने जनवरी, 1679 में जोधपुर में मुगल अधिकारी नियुक्त कर दिये और मारवाड़ को अपने अधिकार में कर लिया। जोधपुर का प्रबन्ध ताहिरखां को सौंप दिया। सोजत और जैतारण में भी शाही अधिकारी नियुक्त कर दिया।

बालक महाराजा को बादशाह ने अपने पास रखना चाहा, लेकिन राठौड़ सरदारों ने इसे उचित नहीं समझा, अतः वे उसे चालाकी से सिरोही ले गये और वहॉ छिपा कर रखा। राठौड़ों ने मारवाड़ में मुगल सत्ता को स्वीकार नहीं किया और वे राठौड़ सरदार दुर्गादास के नेतृत्व में मुगल सेना से बराबर लड़ते रहे। सोजत, डीडवाणा, रोहट आदि स्थानों पर मुगल सेना ने अधिकार कर लिया था, लेकिन राठौड़ 28 वर्ष तक संघर्ष करते रहे और मुगलों को चैन नहीं लेने दिया। राठौड़ों ने मेवाड़ के महाराणा से सहायता लेकर मुगल सेना का सामना किया। राठौड़–मुगल संघर्ष ने राठौड़ सिसोदियों के मध्य एकता का सूत्रपात किया। मुगलों को मेवाड़ में महाराणा राजसिंह के नेतृत्व में और मारवाड़ में राठौड़ों की छापामार युद्ध नीति का सामना करना पड़ा। मुगल राठौड़ संघर्ष 1707 तक चला। औरंगजेब की मृत्यु का समाचार मिलने पर महाराजा अजीतसिंहजी बहुत प्रसन्न हुए और निम्न दोहा कहा –

आई खबर अचिंत री, मिट गई तन रही दाह।
कासिदों यूं भाखियों, मर गयौ औरंगशाह।।

फिर धीरे–धीरे अन्य परगने मेड़ता, पाली, सोजत आदि पर भी अधिकार कर लिया गया। बादशाह बहादुरशाह ने विवश होकर अजीतसिंह से मेल कर लिया और उन्हें महाराजा की पदवी के साथ मनसब आदि दे दी।[37]

जब फर्रूखसियर दिल्ली की गद्दी पर बैठा, तब अजीतसिंह काफी शक्तिशाली हो गये। उन्होंने जोधपुर पर नियुक्त शाही अधिकारियों को निकाल बाहर किया। बादशाह ने उनको दण्ड देने के लिये हुसैनकुली खां को एक बड़ी सेना के साथ मारवाड़ भेजा। अजीतसिंह ने हुसैन अली खां की शर्तो के अनुसार संधि कर ली।[38] बाद में जब दिल्ली दरबार के सैय्यद बन्धुओं और बादशाह के बीच अनबन हो गई, तब अजीतसिंह दरबारी षड़यंत्र में सम्मिलित हो गये जिसके कारण फर्रूखसियर की हत्या कर दी गई। सन् 1719 तक अजीतसिंह भारत का एक प्रमुख राजपूत राजा बन गये। नये बादशाह मुहम्मदशाह के समय मुगल दरबार के षड़यंत्र चलते रहे। इसी के फलस्वरूप अजीतसिंह की हत्या उसके ही पुत्र बख्तसिंह ने 1724 में कर दी जब वे अपने महलों में सो रहे थे।[39]

बख्ता बखत बायरो, मार्‌यौ क्यूं अजमाल।
हिन्दवाणी रो सेवरो, तुरकाणी रो साल।।

हे बिना बख्त (तकदीर) वाले बख्तसिंह तुमने अजमाल (अजीतसिंह) को क्यों मारा ? वह हिन्दुओं का सेहरा (सिरमौर) और तुर्को का दुश्मन था।

इस प्रकार 1500–1700 ई. की कालावधि में मारवाड़ के महाराजाओं का जीवन परिचय तथा उनकी राजनीतिक परिस्थितियां तथा मुगलों से उनका सम्बन्ध इत्यादि की जानकारी उपलब्ध होती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण में मारवाड़ की भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ तत्कालीन युग की मारवाड़ की राजनीतिक स्थितियां प्रस्तुत की गई है। आलोच्यकाल के मारवाड़ के नरेशों का परिचय एवं उनकी राजनीतिक परिस्थितियों के साथ मारवाड़ के पड़ौसी राज्यों में बीकानेर, जैसलमेर, मेवाड़ (उदयपुर), बूंदी, कोटा एवं जयपुर रियासतों के राजा महाराजाओं की राजनीतिक स्थितियां एवं मुगलों के साथ उनका सम्बन्धों को दर्शाते हुए मारवाड़ के साथ उनका सम्बन्ध भी चित्रित किया गया है।

अंत टिप्पणी

1. *आसोपा, रामकर्ण, मारवाड़ का मूल इतिहास, पृ. 114 राधेश्याम प्रेस, जोधपुर 1875*
2. *वही, पृ. 118–121*
3. *वही, पृ. 123*
4. *ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, जोधपुर राज्य का इतिहास पृ. 271 भाग–1, अजमेर, 1940*
5. *आसोपा, रामकर्ण, मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 244 1927*
6. *नैणसी, मुंहणोत, मारवाड़ रा परगनां री विगत, पृ.42 भाग–1, राज.प्रा.वि.प्रति.जोधपुर 1962,*
7. *वही, पृ. 42*
8. *आसोपा, रामकर्ण, राजरूपक, छंद–40 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1941*

9. भार्गव, वी.एस.मारवाड़ से मुगलों के सम्बन्ध, पृ.13 राज.हिन्दीग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1973
10. वही, पृ. 13
11. सरवानी, अब्बास, तारीख–ए–शेरशाही, पृ. 137–138
12. वही, पृ. 139
13. रेउ, विश्वेरनाथ, मारवाड़ का इतिहास, पृ.132 भाग–1, आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेन्ट, जोधपुर,
14. अबुल फजल, अकबरनामा, पृ. 249 भाग–2
15. गहलोत, जगदीशसिंह, मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 109 महा.मानसिंह प्रस्तुत प्रकाश, जोधपुर 1990
16. अबुल फलज, अकबरनामा, पृ. 197 भाग–3,
17. सिंह, रघुवीर व मनोहर, जोधपुर राज्य की ख्यात, पृ. 86 भाग–1, भा.इतिहास अनु.परिषद, नई दिल्ली,
18. टॉड, कर्नल, राजस्थान का इतिहास, पृ. 370 खेमराज, श्रीकृष्ण, बम्बई, 1907,
19. शर्मा,गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, पृ.237 शिवलाल एण्ड सन्स कम्पनी, आगरा, 1993
20. रेउ, विश्वेश्वरनाथ, मारवाड़ का इतिहास, भाग–1, आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेन्ट, जोधपुर 1938
21. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, जोधपुर राज्य का इतिहास, पृ. 85–86 भाग–1, जोधपुर 1940,
22. अहमद, निजामुद्दीन, पृ. 89 तबकाते अकबरी
23. सिंह/राणावत, रघुवीर/मनोहर, जोधपुर राज्य की ख्यात, पृ. 88 भा.इतिहास अनु.परिषद, नई दिल्ली,
24. गहलोत, जगदीशसिंह, मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 110 महा.मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर 1990,
25. वही, पृ.110–111
26. वही, पृ. 112
27. नैणसी, मुहणोत, मारवाड़ रा परगनां री विगत, पृ. 90 भाग–2, राज.प्रा.वि.प्रति. जोधपुर, 1962
28. राठौड़, भूरसिंह, राजस्थान में राठौड़ साम्राज्य का उदय विस्तार, पृ. 268 भाग–1,
29. शोध पत्रिका, परम्परा, पृ. 19 भाग–49–52, राज.शो. सं. चौपासनी,
30. गहलोत, जगदीशसिंह, मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 114 महा.मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर 1990
31. सिंह/राणावत, रघुवीर/मनोहर, जोधपुर राज्य की ख्यात, पृ. 161 भाग–1, भा.इतिहास अनु.परिषद, नई दिल्ली,
32. वही, पृ. 100
33. गहलोत, जगदीशसिंह, मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृ. 116–117 महा.मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर 1990
34. नैणसी, मुंहणोत, नैणसी री ख्यात, पृ. 40 भाग–4, राज.प्रा.वि.प्रति.जोधपुर 1960
35. नैणसी, मुंहणोत, मारवाड़ रा परगनां री विगत, पृ.123 भाग–1, राज.प्रा.वि.प्रति.जोधपुर 1962
36. काजिम, मुहम्मद, अहलगिरीनामा, पृ. 32
37. स्वामी, नरोत्तमदास, बांकीदास री ख्यात, पृ. 33 राज. प्रा.वि.प्रति.जोधपुर 1956
38. दास, श्यामल, वीर विनोद, पृ. 348 भाग–2, मोतीलाल बनारसीदास, 1986
39. वही, पृ. 825–827
40. रेउ, विश्वेश्वरनाथ, मारवाड़ का इतिहास, पृ. 228 भाग–1, आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेन्ट, जोधपुर 1938
41. खॉ, अली मुहम्मद, मिरात–ए–अहमदी, पृ. 224 भाग–1,
42. काजिम, मुहम्मद, आलमगिरीनामा, पृ. 446
43. इरविन, विलियम, लेटर मुगल्स, पृ. 248 भाग–1,
44. भट्ट, जगजीवन, अजितोदय, श्लोक–1–38 महा. मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर, सर्ग–21,
45. आसोपा, रामकर्ण, राजरूपक, पृ. 48 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1941
46. नैणसी, मुंहणोत, नैणसी री ख्यात, पृ. 239–240 भाग–1, राज.प्रा.वि.प्रति.जोधपुर 1960